1. चंदवरदायी

कवि–परिचय

हिंदी साहित्य के आदिकाल में जो वीरगाथा काव्य लिखा गया, उसमें सबसे अधिक प्रसिद्धि 'पृथ्वीराज रासो' को प्राप्त हुई। इसके रचयिता चंदवरदायी का जन्म सन् 1168 ई० में लाहौर में हुआ था। ये महाकवि भाट जाति के जगता गोत्र के थे। ये दिल्ली के अंतिम हिंदू सम्राट पृथ्वीराज चौहान के सखा और सभाकवि थे। कहते हैं कि चंदवरदायी और पृथ्वीराज के जन्म तथा मृत्यु की तिथि भी एक ही थी। प्रसिद्धि है कि जब मुहम्मद गोरी सम्राट पृथ्वीराज को बंदी बनाकर गजनी ले गया, तो वहाँ पहुँच कर चंद ने उनकी अद्भुत बाण विद्या की प्रशंसा की। संकेत पाकर पृथ्वीराज ने शब्दबेधी बाण से गोरी को मार गिराया और अपनी स्वातंत्र्य की रक्षा करने के लिए एक–दूसरे को कटार मारकर दोनों ने मृत्यु का वरण किया।

चंदवरदायी कलम के ही धनी नहीं थे, रणभूमि में पृथ्वीराज के साथ ही अन्य सामंतों की तरह तलवार भी चलाते थे। वे स्वयं वीररस की साकार प्रतिमा थे। उनका 'पृथ्वीराज रासो' हिंदी का आदिकाव्य है। इसमें सम्राट पृथ्वीराज के पराक्रम और वीरता का सजीव वर्णन है। इसमें 69 समय (सर्ग या अध्याय) हैं। कहा जाता है कि चंद इसे अधूरा ही छोड़कर गजनी चले गए थे जिसे उनके पुत्र जल्हण ने बाद में पूरा किया।

काव्य–परिचय

'पृथ्वीराज रासो' जिस रूप में मिलता वह प्रामाणिक नहीं है क्योंकि उसमें वर्णित पात्र, स्थान, नाम, तिथि और घटनाओं में से अधिकतर की प्रामाणिकता संदिग्ध है परंतु इतना अवश्य है कि मूल रूप में यह ग्रंथ इतना विशाल नहीं था। इसमें पृथ्वीराज के अनेक युद्धों, आखेटों और विवाहों का वर्णन है। कवि ने अपने चरितनायक को सभी श्रेष्ठ गुणों से युक्त चित्रित किया है। पृथ्वीराज के व्यक्तित्व में अद्भुत सौंदर्य, शक्ति और शील का सन्निवेश है।

'पृथ्वीराज रासो' वीर रस प्रधान काव्य है। इसमें ओज गुण की दीप्ति आदि से अंत तक विद्यमान है। रौद्र, भयानक, वीभत्स आदि रसों का वर्णन युद्ध के प्रसंग में और शृंगार का वर्णन विविध विवाहों के प्रसंग में मिलता है। शशिव्रता, इंछिनी, संयोगिता, पद्मावती आदि के रूप–सौंदर्य का मोहक वर्णन चंद ने किया है।

चंद की भाषा में संस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंश, अरबी, फारसी आदि की शब्दावली का सशक्त प्रयोग हुआ है। परंपरा से चले आते हुए संस्कृत तथा प्राकृत छंदों का प्रयोग रासो में हुआ ही है, युद्ध वर्णन के लिए सबसे अधिक उपयुक्त छप्पय छंद की छटा देखते ही बनती है।

श्रेष्ठ जीवन–पद्धति, पराक्रम एवं वीरता का जो आदर्श भारतीय जनता ने अपने चित्त में प्रतिष्ठित कर रखा है, पृथ्वीराज उसके प्रतिनिधि रूप में चित्रित हुए हैं। इसलिए पराजित होने पर भी वे जन–मानस के अजेय योद्धा के रूप में विराजमान हैं। चंद ने उनके रूप में भारतीय वीर–भावना का चरमोत्कर्ष दिखाया है, अतएव अप्रामाणिक माना जाने वाला 'पृथ्वीराज रासो' हमारा उत्कृष्ट महाकाव्य है। इससे प्रेरणा लेकर डिंगल में अनेक रासो काव्यों की रचना की गई है।

पाठ–परिचय

प्रस्तुत संकलन में 'पृथ्वीराज रासो' के 'पद्मावती समय' में से कतिपय छंद उद्धृत किए गए हैं। समुद्रशिखर दुर्ग के गढ़पति की राजकुमारी पद्मावती अद्वितीय सुंदरी है। एक तोता उससे पृथ्वीराज के सौन्दर्य और पराक्रम का वर्णन करता है जिसे सुनकर वह पृथ्वीराज के प्रति अनुराग रखने लगती है। जब राजा उसका विवाह कुमाऊँ के राजा कुमोदमणि के साथ करना चाहते हैं, तो वह तोते को संदेशवाहक बनाकर पृथ्वीराज के पास भेजती है। वे शुक की बात सुनकर पद्मावती का वरण करने के लिए चल देते हैं। उधर पद्मावती शिव मंदिर में पूजा करने आती है। वहीं से पृथ्वीराज रुक्मिणी की भाँति उसका हरण करके घोड़े पर बिठाकर दिल्ली की ओर चल देते हैं। राजा की सेना युद्ध करके हार जाती है। इसी बीच अवसर पाकर शहाबुद्दीन गोरी पृथ्वीराज पर आक्रमण करता है। घोर युद्ध होता है। अंत में गोरी को परास्त करके पकड़ लिया जाता है। दिल्ली आकर शुभ लग्न में पद्मावती के साथ पृथ्वीराज विवाह कर लेते हैं।

•••

पद्मावती समय

पूरब दिस गढ़ गढ़नपति। समुद सिषर अति दुग्ग।
तहँ सु विजय सुर राज पति। जादू कुलह अभंग।।1।।
धुनि निसान बहु साद। नाद सुरपंच बजत दीन।
दस हजार हय चढ़त। हेम नग जटित साज तिन।।
गज असंष गजपतिय। मुहर सेना तिय संषह।।
इक नायक कर धरी। पिनाक धरभर रज रष्षह।।
दस पुत्र पुत्रिय एक सम। रथ सुरङ्ग अम्मर डमर।।
भंडार लछिय अगनित पदम। सो पदम सेन कूँवर सुधर।।2।।
मनहुँ कला ससिभान। कला सोलह सो बन्निय।।
बाल बैस ससिता समीप। अंम्रित रस पिन्निय।।
बिगसि कमल म्रिग भमर। वैन षंजन मृग लुट्टिय।।
हीर कीर अरू बिंब। मोति नष सिष अहि घुट्टिय।।
छप्पति गयंद हरि हंस गति। विह बनाय संचै सचिय।।
पदमिनिय रूप पदमावतिय। मनहु काम कामिनि रचिय।।3।।
सामुद्रिक लच्छन सकल। चौसठि कला सुजान।।
जानि चतुर दस अंग षट। रति बसंत परमान।।4।।
सषियन सँग खेलत फिरत। महलनि बाग निवास।।
कीर इक्क दिष्षिय नयन। तब मन भयौ हुलास।।5।।
मन अति भयो हुलास। विगसि जनु कोक किरण रवि।।
अरुण अधर तिय सुधर। बिंब फल जानि कीर छबि।।
यह चाहत चष चकित। उहजु तक्किय झरप्पि झर।।

चंच चहुट्टिय लोभ। लियौ तब गहित अप्प कर।।
हरषत अनंद मन महि हुलस। लै जु महल भीतर गइय।।
पंजर अनूप नग मनि जटित। सो तिहि मँह रष्षत भइय।।6।।
सवालष्ष उत्तर सयल। कमऊँ गङ्ग दूरंग।।
राजत राज कुमोदमनि। हय गय द्रिब्ब अभंग।।7।।
नारिकेल फल परठि दुज। चौक पूरि मनि मुत्ति।।
दई जु कन्यसा बचन बर। अति अनंद करि जुत्ति।।8।।
पदमावति विलषि बर बाल बेली। कही कीर सों बात तब हो अकेली।।
झटं जाहु तुम्ह कीर दिल्ली सुदेस। बरं चाहुवानं जु आनौ नरेसं।।9।।
आँनो तुम्ह चाहुवांन बर। अरु कहि इहै संदेस।।
सांस सरीरहि जो रहै। प्रिय प्रथिराज नरेस।।10।।
लै पत्री सुक यों चल्यौ। उड्यौ गगनि गहि बाव।।
जहँ दिल्ली प्रथिराज नर। अट्ठ जाम में जाव।।11।।
दिय कग्गर नृप राज कर। षुलि बंचिय प्रथिराज।।
सुक देखत मन में हँसे। कियौ चलन कौ साज।।12।।
कर पकरि पीठ हय परि चढ़ाय। लै चल्यौ नृपति दिल्ली सुराय।।
भइ षबरि नगर बाहिर सुनाय। पदमावतीय हरि लीय जाय।।13।।
कम्मान बांन छुट्टहि अपार। लागंत लोह इम सारि धार।।
घमसान घाँन सब बीर षेत। घन श्रोन बहत अरु रकत रेत।।14।।
पदमावति इम लै चल्यौ। हरषि राज प्रिथिराज।।
एतें परि पतिसाह की। भई जु आनि अवाज।।15।।
भई जु आँनि अवाज। आय साहाबदीन सुर।।
आज गहौं प्रथिराज। बोल बुल्लंत गजत धुर।।
क्रोध जोध जोधा अनंद। करिय पती अनि गज्जिय।।
बांन नालि हथनालि। तुपक तीरह स्रव सज्जिय।।
पव्वै पहार मनों सार के। भिरि भुजांन गजनेस बल।।
आये हकरि हकार करि। षुरासान सुलतान दल।।16।।
तिन घेरिय राज प्रथिराज राजं। चिहौ ओर घन घोर निसाँन बाजं।।
गही तेग चहुंवान हिंदवांन रानं। गजं जूथ परि कोप केहरि समानं।।17।।
गिरद्दं उडी भाँन अंधार रैनं। गई सूधि सुज्झै नहीं मज्झि नैनं।।
सिरं नाय कम्मान प्रथिराज राजं। पकरियै साहि जिम कुलिंगबाजं।।18।।
जीति भई प्रथिराज की। पकरि साह लै संग।।
दिल्ली दिँसी मारगि लगौ। उतरि घाट गिर गंग।।19।।
बोलि विप्र सोधे लगन्न। सुभ घरी परट्ठिय।।
हर बांसह मंडप बनाय। करि भांवरि गंठिय।।

ब्रह्म वेद उच्चरहिं। होम चौरी जुप्रति वर।।
पद्मावती दुलहिन अनूप। दुल्लह प्रथिराज राज नर।।
डंडयौ साह साहाबदी। अट्ठ सहस हे वर सुघर।।
दै दाँन माँन षट भेष कौ। चढ़े राज द्रूग्गा हुजर।।20।।

•••

शब्दार्थ

1. पूरब दिसि–पूर्व दिशा में/गढ़न पति –गढ़ों का स्वामी, श्रेष्ठ दुर्ग या गढ़/समुद सिषर–समुद्र शिखर (दुर्ग का नाम), अति–अत्यंत विशाल/ दुग्ग–दुर्ग/तहँ–वहाँ/ सु–श्रेष्ठ/ सुरराज पति–इन्द्र/जादू कूलह–यादव वंश का, यदुकुल का/ अभग्ग–अभग्न, अभेद्य, अजेय।
2. नद–शब्द, गूँज/ सुरपंच–पंचम स्वर (मृदंग, तंत्री, मुरली, ताल, बेला या झाँझ और दुंदुभि आदि वाद्यों के स्वर)/ हय चंढत–घुड़सवार/ हेम–स्वर्ण/ नग–रत्न/ जटित–जड़े हुए/साज–घोड़ों की सज्जा, जीन और चँवर/ तिन–उसके/ असंष–असंख्य/ गजपतिय–गजराज/ मुहर–अग्रभाग, हरावल/ तिन–उसकी/ कर धरी पिनाक – हाथ में धनुष धारण करके/ पुत्र–पुत्रिय समय–समान गुणों से युक्त पुत्र, पुत्री/ सुरंग–सुंदर/उम्मर–आकाश/उमर–चंदोवा/भण्डार–कोष/लछिय–लक्ष्मी/अगणित–असंख्य/ पदम–संख्या विशेष (दस नील से आगे)/ सुधर–सुंदर
3. कला सोलह–चंद्रमा की सोलह कलाओं से/ सो–वह, बन्निय–बनी थी/ बाल बैस–बाल/वयस–बचपन/ ससिता–शिशुता–शैशवावस्था/ ससि–चंद्रमा/ ता–उसके/ अंम्रित–अमृत/ पिन्निय–पीया है, पान किया है/ विंगसि कमल म्रिग – मुख विकसित कमल की श्रेणी को भी लज्जित करता है / बेनु–वंशी/ मृग–हरिण/ लुट्टिय–लूट लिया है, श्रीहीन कर दिया है, छप्पति – छिपाती है/ हरि–सिंह/ बिह बनाय – विधि ने बनाकर/ संचै सचिय – साँचे में ढालकर/ मनहूँ – मानों/ काम–कामिनी – काम देव की पत्नी, रति/ रचिय – रचना की है।
4. सामुद्रिक – हस्त एवं पद तथा मुखाकृति से शुभाशुभ बताने की विद्या/ लच्छिन–लक्षण/ सकल–समस्त/ चौसठ कला– चौसठ कलाएँ/ चतुर्दश–चौदह विद्याएँ/ षट–छह शास्त्र वेद के अंग/ रति बसन्त परमान– रति और वसंत के अनुरूप।
5. सष्षिन संग– सखियों के साथ में/ बग्ग–बाग में, उद्यान में/ कीर–तोता/ इक्क–एक/ दिष्षिय–देखा/ हुलास–प्रसन्न।
6. हुलास–उल्लास, हर्ष/ चष–चक्षु, नेत्र/ चंच चहुहिक–चोंच (चतायी) से पकड़ा/ अप्प–अपने/ रष्षत भई–रख दिया।
7. सवा लष्ष–सपादलक्ष/ सयल–शैल, पर्वत/ दूरंग–दुर्गम/ द्रिव्य–द्रव्य, धन।
8. नारिकेल–नारियल।
9. झटं–शीघ्र।

10. प्रथिराज–पृथ्वीराज।
11. पत्री–पत्र/ गगनि–गगन, आकाश में/गाईबाब–वायु का आधार लेकर।
12. कग्गर–कागज, पत्र/ षुलि–वांचिय – खोलकर बाँचा, पढ़ा।
13. षबरि–खबर/ हरिलीय जाय–अपहरण किया जा रहा है।
14. कम्मान–कमान, धनुष/ श्रोन–खून।
15. पतिसाह–बादशाह, शहाबुद्दीन गोरी/ अवाज–आवाज।
16. करियपती–पंक्तिबद्ध किया/ गज्जिय–गर्जना की/ श्रब–सब/ सज्जिय–सजाए।
17. चिहौ ओर–चारों ओर/ हिंदवान रानं–हिंदुओं के राजा/ गजं जूथ–हाथियों के झुंड पर/ केहरि–केशरी, सिंह।
18. गिरद्द–गर्द, धूल/ भान–भानु, सूर्य/ रैनं–रात/ मज्झि–बीच में/ कुलिंग–पक्षी।
19. लगन्न–लगन/ परट्ठिय–पक्षी या तै की गई/ भांवरि गंठिय–भांवरे पड़ी/ दुल्लह–दूल्हा, वर/ द्रुग्गा–दुर्ग।

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. चंदवरदायी की रचना का नाम है –
   (क) पद्मावत (ख) पृथ्वीराज रासो
   (ग) खुमान रासो (घ) रामायण ( )
2. पृथ्वीराज का युद्ध किसके साथ हुआ ?
   (क) कुमोदमणि (ख) अकबर
   (ग) महमूद गजनवी (घ) शहाबुद्दीन गोरी ( )

   उत्तरमाला –(1) ख (2) घ

अति लघूत्तरात्मक प्रश्न

1. क्या 'पृथ्वीराज रासो' प्रामाणिक रचना है ?
2. चंदवरदायी किसके सभाकवि थे ?
3. तोता पृथ्वीराज से किस नगर में मिला ?
4. पृथ्वीराज रासो का प्रधान रस कौनसा है ?

लघूत्तरात्मक प्रश्न

1. पद्मावती ने तोते से क्या पूछा ?
2. 'पदमसेन कूँवर सुधर' किसके लिए प्रयुक्त हुआ है ?
3. शुक को लेकर पद्मावती कहाँ गई और उसे कहाँ रखा ?
4. पृथ्वीराज ने गोरी को किस प्रकार प्रकड़ लिया ?
5. पृथ्वीराज ने शत्रुओं का सामना किस तरह से किया ?

निबंधात्मक प्रश्न

1. 'पद्मावती समय' के आधार पर इस काव्य के महत्व पर प्रकाश डालिए।
2. 'पृथ्वीराज रासो' हिंदी का आदि महाकाव्य है। इस कथन की सार्थकता प्रमाणित कीजिए।
3. पद्मावती के रूप–सौंदर्य की विशेषताएँ लिखिए।

4. निम्नांकित अवतरणों की सप्रसंग व्याख्या कीजिए –

(क) तिन घेरिय राज प्रथिराज राजं। चिहौ ओर घन घोर निसाँन बाज।।
गही तेग चहुंवान हिंदवांन रानं। गजं जूथ परि कोप केहरि समानं।।17।।

(ख) गिरद्दं उडी भाँन अंधार रैनं। गई सूधि सज्झै नहीं मज्झि नैनं।।
सिरं नाय कम्मांन प्रथिराज राजं। पकरियै साहि जिम कुलिंगबाजं।।18।।

•••

जानने योग्य बात

भारत संघ तथा कुछ राज्यों की राजभाषा स्वीकृत हो जाने के फलस्वरूप हिंदी का मानक रूप निर्धारित करना बहुत आवश्यक था, ताकि वर्णमाला में सर्वत्र एकरूपता रहे और टाइपराइटर, कंप्यूटर आदि आधुनिक यंत्रों के उपयोग में लिपि की अनेकरूपता बाधक न हो। इन सभी बातों को ध्यान में रखकर केंद्रीय हिंदी निदेशालय ने देश के शीर्षस्थ विद्वानों के साथ वर्षों के विचार–विमर्श के पश्चात् हिंदी वर्णमाला तथा अंकों का जो मानक स्वरूप निर्धारित किया, वह इस प्रकार है –

हिंदी वर्णमाला

वर्णमाला का क्रम इस प्रकार होगा –

स्वर – अ आ इ ई उ ऊ ऋ ए ऐ ओ औ

टिप्पणी – संस्कृत के लिए प्रयुक्त देवनागरी वर्णमाला में ॠ, ऌ तथा ॡ भी सम्मिलित हैं, किंतु हिंदी में इनका प्रयोग न होने के कारण इन्हें हिंदी की मानक वर्णमाला में स्थान नहीं दिया गया है।

मूल व्यंजन

क ख ग घ ङ / च छ ज झ ञ/ ट ठ ड ढ ण/ त थ द ध न/ प फ ब भ म/ य र ल व/ श ष स ह/ ड़/ ढ़

इस तरह हिंदी वर्णमाला में मूलतः 11 स्वर तथा 35 व्यंजन हैं।

संयुक्त व्यंजन

क्ष (क् + ष), त्र (त् + र), ज्ञ (ज् + ञ), श्र (श् + र)